



धमाका
डिस्काउंट ऑफर

Exchange & Finance Available

Zelo Electric Scooter

Maa Bhagwati Services & Enterprises
B. No. 23, Infront of IDBI Bank,
Neemuch 9407423966, 8770664866

Commodity:	Gold 79,325	Silver 96,500	Crude Oil 5,963	Natural Gas 302.20	Aluminium 232.30	Copper 827.35
------------	-------------	---------------	-----------------	--------------------	------------------	---------------

वन्दना खण्डेलवाल ने संभाला भाजपा जिला अध्यक्ष का पद, समारोह में शामिल हुए सांसद विधायक सहित कई पदाधिकारी व कार्यकर्ता



नीमच 14 जनवरी (निप्र)। नीमच में भारतीय जनता पार्टी में पहली बार किसी महिला को जिलाध्यक्ष की जिम्मेदारी मिली है। पार्टी कार्यालय तपोभूमि में आयोजित संगठन पर्व में वंदना खंडेलवाल ने मंगलवार को नए जिला अध्यक्ष के रूप में पदभार ग्रहण किया।

इस दौरान सांसद सुधीर गुप्ता, नीमच विधायक दिलीप सिंह परिहार और मनासा विधायक अनिरुद्ध माधव मारू सहित कई वरिष्ठ नेता मौजूद रहे। कार्यक्रम की शुरुआत भारतीय परंपरा के अनुरूप मां भारती और पार्टी के संस्थापक सदस्यों के चित्रों पर माल्यार्पण

से हुई। कार्यक्रम में जिलेभर से एकत्रित कार्यकर्ताओं ने वंदना खंडेलवाल का पारंपरिक साफा और पुष्पमाला से स्वागत किया।

नवनि्युक्त जिलाध्यक्ष वंदना खंडेलवाल ने पार्टी नेतृत्व का आभार जताते हुए नगर पालिका पाषंद और जिलाध्यक्ष की

दोहरी भूमिका को पूरी निष्ठा से निभाने का संकल्प लिया। कार्यक्रम में जिला पंचायत अध्यक्ष सज्जन सिंह चौहान, पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष अन्वति का जाट, नगर पालिका अध्यक्ष स्वाति चोपड़ा सहित बड़ी संख्या में पार्टी कार्यकर्ता उपस्थित रहे।वही मंच पर मौजूद विधायक सांसद और जनप्रतिनिधियों ने भी आयोजन के दौरान अपने-अपने वक्तव्य रखें और नवागत भाजपा जिला अध्यक्ष वंदना खंडेलवाल को बधाइयां प्रेषित की।

एमपी बीजेपी के 12 और जिलाध्यक्षों के नामों का ऐलान

भोपाल 14 जनवरी (एजेंसी)। मध्यप्रदेश में भाजपा ने 12 और जिलों के जिलाध्यक्षों के नामों की घोषणा कर दी है। मंगलवार देर शाम एक बार फिर भाजपा की ओर से एक के बाद एक 12 जिलाध्यक्षों के नाम घोषित किए हैं। इन 12 नामों को मिलाकर अभी तक कुल मिलाकर 32 जिलों के जिलाध्यक्षों के नामों का ऐलान किया जा चुका है। बाकी बचे जिलों में भी पार्टी जल्द ही जिलाध्यक्षों के नामों का ऐलान करेगी।

इन 12 जिलों के जिलाध्यक्ष घोषित - डिंडोरी- चमरू नेताम, सागर- श्याम तिवारी, दमोह- श्याम शिवहरे, दतिया- रघुवीर शरण कुशवाहा, अनूपपुर- हीरा सिंह श्याम, बालाघाट- राम किशोर कांवरे, शाजापुर- रवि पांडेय, सागर ग्रामीण- रानी पटेल, ग्वालियर नगर- जयप्रकाश राजोरिया, कटनी- दीपक टंडन सोनी, जबलपुर नगर- रत्नेश सोनकर, सिंगरौली- सुंदर शाह ।

नवीन कृषि मण्डी कार्यालय भवन व बैंक का लोकार्पण आज

नीमच 14 जनवरी (निप्र)। कृषकों एवं व्यापारियों की सुविधा के लिए कृषि उपज मंडी समिति, नीमच द्वारा मुख्य मंडी प्रांगण के अतिरिक्त ग्राम डुंगलावदा, चोरा में 100 एकड़ (38 हेक्टेयर) भूमि पर नवीन (अतिरिक्त) मंडी प्रांगण का विकास किया गया है। आज 15 जनवरी 2025 बुधवार से नवीन(अतिरिक्त) मंडी प्रांगण में लहसुन, सोयाबीन, रायड़ा, मक्का, जौ एवं ज्वार उपजों का नीलाम कार्य प्रारंभ किया जा रहा है। साथ ही नवनिर्मित मण्डी कार्यालय भवन एवं बैंक भवन का लोकार्पण किया जा रहा है। लोकार्पण कार्यक्रम

डॉ. ओमप्रकाश क्षत्रिय को मिली मानद डॉक्टरेट की उपाधि



'प्रकाश' को उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए विश्व संस्कृति और पर्यावरण संरक्षण आयोग द्वारा मानद डॉक्टरेट से सम्मानित किया गया है। डॉ. क्षत्रिय को यह सम्मान बाल साहित्य के क्षेत्र में उनके अद्वितीय योगदान और समाज सेवा के लिए दिया गया है। विश्व संस्कृति और पर्यावरण संरक्षण आयोग के निदेशक मंडल ने डॉ. क्षत्रिय के कार्यों को देखते हुए उन्हें यह सम्मान देने का निर्णय लिया।

मकर संक्रांति पर छाया कोहरा, आज बारिश के आसार

नीमच 14 जनवरी (निप्र)। मकर संक्रांति पर्व अंचल में पारंपरिक उत्साह के साथ मनाया गया। दिनभर बच्चों और युवाओं क साथ ही बड़ों ने भी पतंगबाजी और गिल्ली डंडा का आंदन लिया। सुबह से ही स्नान-दान और मंदिरों में दर्शन का दौर चला। मंगलवार की सुबह 10:30 बजे तक कोहरा छाया रहा और सर्द हवाएं चली। अंचल में आज बुधवार को कहीं कहीं बारिश के आसार हैं।

मकर संक्रांति पर लोक मान्यताओं के अनुसार, लोगों ने सुबह से ही पुण्य कमाने के लिए



दान-धर्म के कार्य किए। कई जगहों पर गरीबों को अन्न और वस्त्र दान किए गए। सामाजिक संगठनों ने भी समाज के कमजोर वर्ग के लिए भंडारे का आयोजन किया।नीमच सिटी के वरिष्ठ गोपाल चक्की

वाले लालचंद कोटी फोड़ा, कमल चौरसिया राजू पान वाले, अनिल बैरागी ,अज्जू चौरसिया, रमू सोनी, भगवान लाल लखोटिया, सोनू पोरवाल, हुसैनी भाई बोहरा, चंद्रशेखर तिवारी चंदू भैया आदि

के सहयोग से गरीबों एवं बच्चों को गुलाब जामुन बांटे गए।

महकी खुशबू लिया त्योहारी आनंद - मंगलवार को सनातन धर्मावलंबियों के घरों में सुबह से ही खीचड़ा और गुड-तिल के पकवानों की शुशबू महकी। लोगों ने पशुओं को चारा और गुड खिलाया वहीं जरूरत मंदों को दान पुण्य किया गया। नीमच के दशहरा मैदान, हायर सेकेंडरी स्कूल मैदान, मीडिल स्कूल मैदान समेत बगीचों और खुले मैदानों सहित कॉलोनिंगों में लोगों ने पारंपरिक खेल गिल्ली डंडा खेला। आसमान में रंग-बिरंगी पतंग उड़ा कर त्योहार का आनंद लिया।

त्योहार के चलते मंडी में नहीं हो रही थी नीलामी, शेड खाली कराने से नाराज थे किसान

किसानों ने किया हंगामा, फिर मंडी में शुरू हुई नीलामी



नीमच 14 जनवरी (निप्र)। मकर संक्रांति के कारण मंगलवार को मंडी में नीलामी शुरू नहीं हो पाई तो किसानों ने हंगामा कर दिया। इसके बाद मंडी सचिव ने मौके पर पहुंच कर समझाइश दी और नीलामी शुरू करवाई। किसान बुधवार को होने वाले लोकार्पण कार्यक्रम के चलते पहले से शेड खाली कराने को लेकर भी नाराज थे।

व्यापारियों ने किया इनकार,किसानों ने भरी हुंकार - नई कृषि उपज मंडी चोरा, नीमच में मंगलवार को मकर संक्रांति पर शासकीय अवकाश नहीं था। इस कारण बंद की पहले घोषणा नहीं हुई। मंगलवार को त्योहार के चलते पर्याप्त हम्माल नहीं आए और किसान उपज लेकर मंडी पहुंच गए। जब व्यापारियों ने हम्मालों के अभाव को कारण बताते नीलामी करने से इनकार कर दिया तो किसानों ने हुंकार भरी और विरोध प्रदर्शन शुरू कर दिया। मेन गेट बंद कर नारेबाजी शुरू कर दी गई।

यह भी था नाराजगी का

कारण - प्रदर्शन कर रहे किसानों ने मीडिया को बताया कि मंडी में शनिवार और रविवार का अवकाश रहा। इसके बाद सोमवार को यह बताया गया था कि मंगलवार को भी मंडी खुली रहेगी। तीन दिन से उपज की नीलामी नहीं होने और बाजार मूल्य से कम दाम मिलने से किसान आक्रोशित हो गए। उनका आरोप था कि व्यापारी उनकी उपज को सामान्य दिनों की तुलना में आधे दाम पर खरीदने की जुगत में थे। उधर किसानों को मंडी के शेड में भी उपज रखने से मना कर दिया गया, क्योंकि अगले दिन यानी बुधवार को मंडी कार्यालय एवं बैंक का लोकार्पण करने कृषि मंत्री ऐदलसिंह कंसाना का कार्यक्रम निर्धारित है। उधर, आसमान पर बादल छाए होने से किसानों की चिंता बढ़ी और उन्होंने हंगामा शुरू कर दिया।

इन्होंने दी समझाइश, शुरू

करवाई मंडी - किसानों के हंगामा करने की सूचना पर कृषि उपज मंडी नीमच के सचिव उमेश शर्मा मौके पर पहुंचे और दोनों पक्षों से बातचीत की।

उनके हस्तक्षेप के बाद नीलामी प्रक्रिया शुरू हुई, लेकिन इस विवाद

के कारण करीब एक घंटे तक मंडी का काम प्रभावित रहा। मीडिया को मंडी सचिव शर्मा ने बताया कि त्योहार के चलते हम्मालों की कमी थी, इस कारण समस्या हुई थी। अब समाधान हो गया है और नीलामी भी शुरू हो गई है।

यह बोले किसान.....

व्यापारियों ने सोमवार को बताया था कि संक्रांति का शासकीय अवकाश घोषित नहीं होने से मंगलवार सुबह 11 बजे के बाद नीलामी होगी। जब किसान मंडी में उपज लेकर आ गए तो व्यापारियों ने यह कह कर नीलामी से इनकार कर दिया कि त्योहार के कारण उनके पास कोई हम्माल नहीं है। ऐसे में उनकी उपज खरीद नहीं सकते। इससे नाराज किसानों ने मंडी गेट बंद किया था।

- विनोद कुमार, किसान

मंडी में उपज की नीलामी में भाव एकदम कम कर दिए गए हैं। मंडी प्रशासन के अनुसार मंडी चालू है, जबकि नीलामी नहीं की जा रही। मैं प्याज लेकर रानपुर गांव से आया हूं। मुझे यहां तीन दिन हो गए। लोकार्पण कार्यक्रम के चलते शेड में उपज खाली करने नहीं दी जा रही है। ऐसे में परेशानी हुई तो आंदोलन किया।

- बने सिंह झाला, किसान



सफर जोश का मंजिल कामयाबी की

सोनी कोचिंग क्लारसेस के छात्र

प्रणव शर्मा

सुपुत्र : निरंजना-अरुणकुमार शर्मा

का IBPS द्वारा केनरा बैंक में

प्रोबेशनरी ऑफिसर (P.O.)

(असिस्टेंट मैनेजर स्केल- 1)

के पद पर फायनल सिलेक्शन होने पर

हार्दिक बधाई एवं

उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएं

आगामी 15000 बैंक भर्ती के लिए विशेष बैच

Since 1998

2500 से अधिक छात्रों को प्रतिष्ठित सरकारी पदों पर चयनित करा चुके हैं।

सोनी कोचिंग क्लारसेस

ISO 9001 : 2015 Certified

धनीराम सगर मार्केट, भायेश्वर मंदिर रोड, नीमच मो. 8770508002, 9300905061

ज्ञानोदय

मल्टीस्पेशलिटी हॉस्पिटल में

आयुष्मान योजना लागू

5 लाख रूपए

प्रति वर्ष, पात्र परिवार को निःशुल्क उपचार

GMH

...where healing begins

आयुष्मान भारत

अब बीमार नहीं रहेगा लाचार, अंचल के भव्य हॉस्पिटल में होगा निःशुल्क उपचार

आयुष्मान कार्ड धारकों के निम्नलिखित बीमारियों के उपचार निःशुल्क किए जाएंगे -

- जनरल मेडिसीन
- बाल चिकित्सा प्रबंधन
- नवजात गहन शिशु इकाई
- आपातकालीन चिकित्सा
- जनरल सर्जरी
- बर्न प्रबंधन
- प्रसूति एवं स्त्री रोग
- अस्थि एवं हड्डी रोग
- गंभीर चोटें
- संक्रामक रोग

अब उदयपुर एवं इंदौर जाने की जरूरत नहीं

सुपरस्पेशलिस्ट डॉक्टर

का समूह एक ही स्थान पर उपलब्ध

ज्ञानोदय मल्टीस्पेशलिटी हॉस्पिटल

ज्ञानोदय महाविद्यालय के पीछे, कनावटी, नीमच 6262778282

अमेरिकी आर्थिक नीतियां अन्य देशों को विपरीत रूप से प्रभावित कर सकती है



प्रहलाद सबनानी

वैश्विक स्तर पर अर्थशास्त्र के वर्तमान सिद्धांत (मॉडल) विभिन्न प्रकार की आर्थिक समस्याओं को हल करने के संदर्भ में बोथरे साबित हो रहे हैं। इसलिए अमेरिकी एवं अन्य विकसित देशों के अर्थशास्त्री आज साम्यवादी एवं पूंजीवादी सिद्धांतों (मॉडल) के स्थान पर वैश्विक स्तर पर आर्थिक क्षेत्र में आ रही विभिन्न समस्याओं के हल हेतु एक तीसरे रास्ते (मॉडल) की तलाश करने में लगे हुए हैं और इस हेतु वे भारत की ओर बहुत आशामारी नजरों से देख रहे हैं।

वैश्विक स्तर पर अमेरिकी डॉलर लगातार मजबूत हो रहा है और अंतरराष्ट्रीय बाजार में अन्य देशों की मुद्राओं की कीमत अमेरिकी डॉलर की तुलना में गिर रही है। इससे, विशेष रूप से विभिन्न वस्तुओं का आयात करने वाले देशों में वस्तुओं के आयात के साथ मुद्रा स्फीति का भी आयात हो रहा है। इन देशों में मुद्रा स्फीति बढ़ती जा रही है और इसे नियंत्रित करने के उद्देश्य से एक बार पुनः ब्याज दरों में वृद्धि की सम्भावना भी बढ़ रही है। भारतीय रिजर्व बैंक को अंतरराष्ट्रीय बाजार में भारतीय रुपए के अवमूल्यन को रोकने के लिए भारत के विदेशी मुद्रा भंडार में से लगभग 5,000 करोड़ अमेरिकी डॉलर को बेचना पड़ा है जिससे भारत का विदेशी मुद्रा भंडार अपने उच्चतम स्तर 70,500 करोड़ अमेरिकी डॉलर से घटकर 65,500 करोड़ अमेरिकी डॉलर के भी नीचे आ गया है। अमेरिकी डॉलर के लगातार मजबूत होने के चलते विश्व के लगभग सभी देशों की यही स्थिति बनती हुई दिखाई दे रही है। दूसरी ओर, अमेरिका में बजटीय घाटा एवं बाजार ऋण की राशि अपने उच्चतम स्तर पर पहुंच गई है एवं अमेरिका को इसे नियंत्रित करने के लिए अपनी आय में वृद्धि करना एवं व्यय को घटाना आवश्यक हो गया है। परंतु, 20 जनवरी 2025 को डॉनल्ड ट्रम्प के अमेरिका के राष्ट्रपति बनते ही सम्भव है कि ट्रम्प प्रशासन द्वारा आयकर में भारी कमी की घोषणा की जाय। डॉनल्ड ट्रम्प ने अपने चुनावी भाषण में इसके बारे में इशारा भी किया था। हां, सम्भव है कि आयकर को कम करने के चलते कुल आय में होने वाली कमी की भरपाई अमेरिका द्वारा कच्चे तेल के उत्पादन में वृद्धि कर इसके निर्यात में वृद्धि एवं अमेरिका में विभिन्न वस्तुओं के अमेरिका में होने वाले आयात पर कर में वृद्धि करने के चलते कुछ हद तक हो सके। परंतु, कुल मिलाकर यदि आय में होने वाली सम्भावित कमी की भरपाई नहीं हो पाती है तो अमेरिका में बजटीय घाटा एवं बाजार ऋण की राशि में अतुलनीय वृद्धि सम्भव है। जो एक बार पुनः अमेरिका में मुद्रा स्फीति को बढ़ा सकता है और फिर से अमेरिका में ब्याज दरों में कमी के स्थान पर वृद्धि देखने को मिल सकती है।

पूरे विश्व में पूंजीवादी नीतियों के चलते मुद्रा स्फीति को नियंत्रण में रखने के उद्देश्य से विभिन्न देशों द्वारा ब्याज दरों में वृद्धि की घोषणा की जाती रही है। किसी भी देश में मुद्रा स्फीति की दर यदि खाद्य पदार्थों की कीमतों में वृद्धि के चलते बढ़ रही है तो इसे ब्याज दरों में वृद्धि कर नियंत्रण में नहीं लाया जा सकता है। हां, खाद्य पदार्थों की बाजार में आपूर्ति बढ़ाकर जरूर मुद्रा स्फीति को तुरंत नियंत्रण में लाया जा सकता है। अतः यह मांग की तुलना में आपूर्ति सम्बंधी मुद्दा अधिक है। उत्पादों की मांग में कमी करने के



उद्देश्य से बैंकों द्वारा ब्याज दरों में वृद्धि की जाती है, जिससे ऋण की लागत बढ़ती है और इसके कारण अंततः विभिन्न उत्पादों की उत्पादन लागत बढ़ती है। उत्पादन लागत के बढ़ने से इन उत्पादों की मांग बाजार में कम होती है जो अंततः इन उत्पादों के उत्पादन में कमी का कारण भी बनती है। उत्पादन में कमी अर्थात बहुराष्ट्रीय कम्पनियों द्वारा कर्मचारियों की छुट्टी करने के परिणाम के रूप में भी दिखाई देती है। हाल ही के वर्षों में अमेरिका में जब मुद्रा स्फीति की दर पिछले लगभग 50 वर्षों के उच्चतम स्तर पर अर्थात 10 प्रतिशत के आसपास पहुंच गई थी, तब फेडरल रिजर्व द्वारा फेड दर (ब्याज दरों) को भी 0.25 प्रतिशत से बढ़ाकर 6.50 प्रतिशत तक लाया गया था, और यह दर लम्बे समय तक बनी रही थी। इसका प्रभाव, अमेरिका की सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में कार्य कर रही कम्पनियों पर अत्यधिक विपरीत रूप में पड़ता दिखाई दिया था और लगभग 2 लाख इंजीनियरों की छुट्टी इन कम्पनियों द्वारा की गई थी। अतः मुद्रा स्फीति को नियंत्रण में लाने के उद्देश्य से ब्याज दरों में लगातार वृद्धि करने का निर्णय अमानवीय है एवं इसे उचित निर्णय नहीं कहा जा सकता है। ब्याज दरों में वृद्धि करने का परिणाम वैश्विक स्तर पर कोई बहुत अधिक सफल भी नहीं रहा है। अमेरिका को मुद्रा स्फीति की दर को नियंत्रण में लाने के लिए लगभग 3 वर्ष (२) का समय लग गया है और यह इस बीच ब्याज दरों को लगातार उच्च स्तर पर बनाए रखने के बावजूद सम्भव नहीं हो पाया है।

भारत में भी भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा मुद्रा स्फीति को नियंत्रित करने के उद्देश्य से रेपो दर (ब्याज दर) में पिछले

लगभग 22 माह तक कोई परिवर्तन नहीं किया गया था एवं इसे उच्च स्तर पर बनाए रखा गया था जिसका असर अब भारत के आर्थिक विकास दर पर स्पष्ट दिखाई दे रहा है एवं वित्तीय वर्ष 2024-25 की द्वितीय तिमाही में भारत में सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि दर गिरकर 5.2 प्रतिशत रही है, जो वित्तीय वर्ष 2023-24 में 8.2 प्रतिशत की रही थी। आर्थिक विकास दर में वृद्धि दर का कम होना अर्थात देश में रोजगार के कम अवसर निर्मित होना एवं नागरिकों की आय में वृद्धि की दर का भी कम होना भी शामिल रहता है। अतः लंबे समय तक ब्याज दरों को ऊंचे स्तर पर नहीं बनाए रखा जाना चाहिए। यह सही है कि मुद्रा स्फीति को एक दैत्य की संज्ञा भी दी जाती है और इसका सबसे अधिक विपरीत प्रभाव गरीब वर्ग पर पड़ता है। अतः किसी भी देश के लिए इसे नियंत्रण में रखना अति आवश्यक है। परंतु, मुद्रा स्फीति को नियंत्रण में रखने हेतु लगातार ब्याज दरों में वृद्धि करते जाना भी अमानवीय कृत्य है। ब्याज दरों में वृद्धि की तुलना में विभिन्न उत्पादों की बाजार में आपूर्ति बढ़ाकर मुद्रा स्फीति को तुरंत नियंत्रण में लाया जा सकता है। विभिन्न देशों की सरकारों द्वारा उत्पादों की आपूर्ति बढ़ाने हेतु प्रयास किए जाने चाहिए। आपूर्ति बढ़ाने के प्रयासों में इन उत्पादों के उत्पादन में वृद्धि करना भी शामिल होगा, कम्पनियों द्वारा उत्पादन में वृद्धि करने के साथ साथ रोजगार के नए अवसरों का निर्माण भी किया जाएगा। इस प्रकार के निर्णय देश की अर्थव्यवस्था के लिए हितकारी एवं लाभदायक साबित होंगे। अमेरिका द्वारा आर्थिक क्षेत्र से सम्बंधित की जा रही

विभिन्न घोषणाओं जैसे चीन एवं अन्य देशों से आयात की जाने वाली वस्तुओं पर आयात कर में 60 प्रतिशत से 100 प्रतिशत तक की वृद्धि करना, अमेरिका पर लगातार बढ़ रहे ऋण को कम करने हेतु किसी भी प्रकार के प्रयास नहीं करना, अमेरिकी बजटीय घाटे का लगातार बढ़ते जाना, विदेशी व्यापार के क्षेत्र में व्यापार घाटे का लगातार बढ़ते जाना, विभिन्न देशों द्वारा डीडोलराइजेशन के प्रयास करना आदि ऐसी समस्याएं हैं जिनका हल यदि शीघ्र ही नहीं निकाला गया तो अमेरिकी अर्थव्यवस्था के साथ साथ अन्य देशों की अर्थव्यवस्थाएं भी विपरीत रूप से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकेंगी।

प्राचीन भारत के इतिहास में मुद्रा स्फीति जैसी परेशानियों का जिक्र नहीं के बराबर मिलता है। भारतीय आर्थिक दर्शन के अनुसार भारत में उत्पादों की उपलब्धता पर विशेष ध्यान दिया जाता रहा है अतः वस्तुओं की बढ़ती मांग के स्थान पर बाजार में वस्तुओं की आपूर्ति ही अधिक रही है। ग्रामीण इलाकों में 50 अथवा 100 ग्रामों के क्लस्टर के बीच हाट (बाजार) लगाए जाते थे जहां स्थानीय स्तर पर निर्मित वस्तुओं/उत्पादों/खाद्य पदार्थों को बेचा जाता था। स्थानीय स्तर पर निर्मित की जा रही वस्तुओं को स्थानीय बाजार में ही बेचने से इन वस्तुओं के बाजार मूल्य सदैव नियंत्रण में ही रहते थे। अतः वस्तुओं की मांग की तुलना में उपलब्धता अधिक रहती थी। कई बार तो उपलब्धता का अधिक्य होने के चलते इन वस्तुओं के बाजार में दाम कम होते पाए जाते थे। इस प्रकार मुद्रा स्फीति जैसी समस्याएं दिखाई नहीं देती थीं। जबकि वर्तमान में, विभिन्न देशों के बाजारों में विभिन्न उत्पादों की उपलब्धता पर ध्यान ही नहीं दिया जा रहा है, इन वस्तुओं की मांग बढ़ने से इनकी कीमतें बढ़ने लगती हैं, और, इन कीमतों पर नियंत्रण करने के उद्देश्य से यह प्रयास किया जाने लगता है कि किस प्रकार इन वस्तुओं की मांग बाजार में कम की जाय, इसे एक नकारात्मक निर्णय ही कहा जाना चाहिए।

वैश्विक स्तर पर अर्थशास्त्र के वर्तमान सिद्धांत (मॉडल) विभिन्न प्रकार की आर्थिक समस्याओं को हल करने के संदर्भ में बोथरे साबित हो रहे हैं। इसलिए अमेरिकी एवं अन्य विकसित देशों के अर्थशास्त्री आज साम्यवादी होने एवं पूंजीवादी सिद्धांतों (मॉडल) के स्थान पर वैश्विक स्तर पर आर्थिक क्षेत्र में आ रही विभिन्न समस्याओं के हल हेतु एक तीसरे रास्ते (मॉडल) की तलाश करने में लगे हुए हैं और इस हेतु वे भारत की ओर बहुत आशामारी नजरों से देख रहे हैं। प्राचीन भारतीय आर्थिक दर्शन इस संदर्भ में निश्चित ही वर्तमान समय में आ रही विभिन्न प्रकार की आर्थिक समस्याओं के हल में सहायक एवं लाभकारी सिद्ध हो सकता है।

संपादकीय

सहकार से बनेगी बात

सुप्रीम कोर्ट में बुधवार को मुख्य चुनाव आयुक्त और अन्य चुनाव आयुक्तों की नियुक्ति को लेकर बनाए गए 2023 के नये कानून की संवैधानिक वैधता को चुनौती देने वाली याचिका पर सुनवाई हुई। अब अगली सुनवाई 4 फरवरी को होगी। लोगों को याद होगा कि सुप्रीम कोर्ट ने 2 मार्च 2023 के अपने निर्णय में मुख्य चुनाव आयुक्त और चुनाव आयुक्तों की नियुक्ति के लिए प्रधानमंत्री, नेता प्रतिपक्ष और प्रधान न्यायाधीश को शामिल करते हुए एक चयन समिति का गठन किया था। इसके बाद संसद ने एक नया कानून बनाया जिसमें प्रावधान है कि चयन समिति में प्रधानमंत्री, एक केंद्रीय कैबिनेट मंत्री, नेता प्रतिपक्ष या लोक सभा में सबसे बड़े विरोधी दल के नेता शामिल होंगे। महत्वपूर्ण बात यह है कि इस चयन समिति से प्रधान न्यायाधीश को हटा दिया गया। इस नये कानून को लेकर विवाद है। एम्सोसिपेशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफॉर्मस (एड्जीआर) और मध्य प्रदेश की कांग्रेस नेता जय ठाकुर ने शीर्ष अदालत में दायर अपनी अर्जी में कहा है कि केंद्र सरकार ने अदालत के फैसले का आधार बदले बिना इसे बदल दिया। एड्जीआर की ओर से पेश वरिष्ठ वकील प्रशांत भूषण का विश्वास है कि सरकार चुनाव आयुक्तों की नियुक्ति को नियंत्रित नहीं कर सकती। इससे लोकतंत्र को खतरा है। ऐसा प्रतीत होता है कि नये कानून में चयन समिति से प्रधान न्यायाधीश को हटाने के पीछे सरकार की मंशा यही रही होगी कि उसे किसी तरह की दुविधा का सामना न करना पड़े और उसे इस बात की भी आशंका रही होगी कि अगर मुख्य चुनाव आयुक्त और चुनाव आयुक्तों की नियुक्ति में प्रधान न्यायाधीश और नेता प्रतिपक्ष दोनों ने अपना विशेष दर्ज कर दिया तो सरकार के सामने एक असहज स्थिति पैदा हो सकती है। हालांकि गैर-सरकारी संगठन एड्जीआर और वरिष्ठ वकील प्रशांत भूषण की ओर से उठाई आपत्तियां भी विचारणीय है और इसे सिरे से खारिज नहीं किया जा सकता। अब देखने वाली बात यह है कि इस अहं मसले पर सुप्रीम कोर्ट क्या फैसला देता है। मामले की सुनवाई करते हुए शीर्ष अदालत

चिंतन-मनन

सिद्धांत गौण है, सत्ता प्रमुख

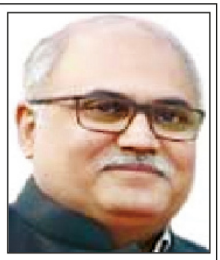
पिछले दिनों में राष्ट्रीय रंगमंच पर जिस प्रकार का राजनीतिक चरित्र उभरकर आ रहा है, वह एक गंभीर चिंता का विषय है। ऐसा लगता है, राजनीति का अर्थ देश में सुव्यवस्था बनाए रखना नहीं, अपनी सत्ता और कुर्सी बनाए रखना है। राजनीतिज्ञ का अर्थ उस नीति-निपुण व्यक्तित्व से नहीं है, जो हर कीमत पर राष्ट्र की प्रगति, विकास-विस्तार और समृद्धि को सर्वोपरी महत्व दे; किंतु उस विदुषक-विशारद व्यक्तित्व से है, जो राष्ट्र के विकास और समृद्धि को अवन्ति के गर्त में फेंककर भी अपनी कुर्सी को सर्वोपरि महत्व देता हो। राजनेता का अर्थ राष्ट्र को गति की दिशा में अग्रसर करने वाला नहीं, अपने दल को सत्ता की ओर अग्रसर करने वाला रह गया है। यही कारण है कि आज राष्ट्र गौण है, दल प्रमुख है। सिद्धांत गौण है, सत्ता प्रमुख है। चरित्र गौण है, कुर्सी प्रमुख है। एक राजनेता में राष्ट्रीय चरित्र, न्याय-सिद्धांत और नेतृत्व क्षमता के गुणों की आवश्यकता नहीं, किंतु आज कुशल राजनेता वही है, जो अपने दल के लिए राष्ट्र के साथ भी विश्वासघात कर सकता हो, अपनी कुर्सी के लिए अपने दल के साथ भी विश्वासघात करने का जिसमें साहस या दुस्साहस हो।

बहुत बार मन में प्रश्न उभरता है, क्या राजनीति का अपना कोई चरित्र नहीं होता अथवा सत्ता प्राप्त के लिए राष्ट्र, समाज, दल और व्यक्ति की विश्वासपूर्ण भावनाओं के साथ खिलवाड़ करना ही राजनीति का चरित्र होता है? जनता की कोमल भावनाओं का शोषण करके सत्तासीन होने के बाद क्या राजनेता का व्यक्तित्व जनता और राष्ट्र से भी बड़ा हो जाता है?

यदि ऐसा नहीं है तो आज की राजनीति क्यों अपने प्रिय पुत्रों, संबंधियों और चमचों-चाटुकारों के चप्रव्यूह में फंसरह रह गई है? राष्ट्र को स्थिर नेतृत्व प्रदान करने के नाम पर क्यों सिद्धांतहीन समझौते और स्तरहीन कलाबाजियां दिखाई जा रही हैं? संप्रदायवाद, जातिवाद, भाषावाद और प्रांतवाद को भड़का करके क्यों सत्ता की गोदियां बिटाई जा रही हैं? आज की राजनीति को देखकर मन ग्लानि और विठ्ठणा से भर जाता है। आखिर यह सबकुछ कब तक चलता रहेगा?

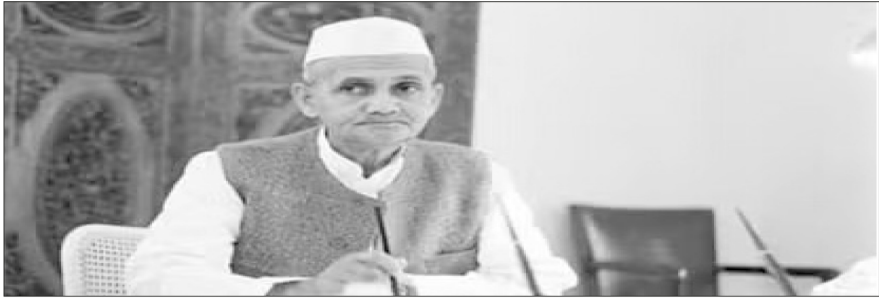
ईमानदार कर्तव्यनिष्ठ व्यक्तित्व के धनी और भारत के द्वितीय प्रधानमंत्री को उनकी गरिमानुरूप याद नहीं किया जाता। शास्त्री जी भारत के ऐसे कुछ गिने चुने सपूतों में से हैं जिनका भारत की स्वतंत्रता और स्वतंत्र भारत में बड़ी अहम भूमिका रही है। उन्होंने जहाँ भारत की आजादी के लिये जी जान एक किया तो वहीं स्वतंत्र भारत के नव निर्माण में अपना जीवन दिया। ऐसे महान चरित्र के स्वामी थे शास्त्री जी। भारत का यह लाल दो अक्टूबर सन् 1904 को उत्तर प्रदेश स्थित मुगलसराय में जन्मा था। इनके पिता का नाम शरदा प्रसाद श्रीवास्तव था। ये पेशे से अध्यापक थे। शास्त्री जी को अपने पिता का सानिध्य ज्यादा दिनों तक नहीं प्राप्त हो सका, मात्र दो वर्ष की अल्पायु में ही उनके पिता का स्वर्गवास हो गया था। इसके बाद वे अपने नाना के यहाँ उन्नाव चले गये। बचपन से ही उन्होंने आर्थिक व सामाजिक समस्याओं का सामना किया। इन्हीं सब के चलते उनके व्यक्तित्व में दृढ़ता एवं जुझारुमन का रङ्गान बढ़ता चला गया, और जो बाद में उनके व्यक्तित्व का एक प्रमुख पहचान बना। उनका यही आत्मबल एक दिन उन्हें स्वतंत्रता संग्राम सेनानी से लेकर कांग्रेस महासचिव, रेल मंत्री और प्रधानमंत्री पद तक प्रतिष्ठित किया।

लाल बहादुर ने 1925 में काशी विद्यापीठ से परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया एवं 1927 में इनका विवाह हो गया। शास्त्री जी जब युवा थे तब की एक घटना का उल्लेख है, यह घटना उनके आत्म बल, सहनशीलता दृढप्रतिज्ञ स्वभाव का एक उदाहरण है। वे विद्यालय जाने के नदी पार कर पढ़ने जाते थे, तो इसी क्रम में वे रामनगर गंगाटट पर नाव घाट के पास पहुँचे तो उन्होंने देखा कि नाव में बैठने के लिये उनके पास पैसे तो हैं नहीं। नाव वाले ने भी बैठाने से इंकार कर दिया, और तो और अन्य सहपाठी जो नाव में बैठे थे, उन्होंने उनका उपास किया। पर वे क्रोधित होने की बजाय



रजनीश कपूर

नु नावी सभा हो या संसद सदन जब भी नेताओं के बोल बिगड़ते हैं तो सुखियां बनते देर नहीं लगती। परंतु सोचने वाली बात यह है कि जहां एक ओर हमारे देश में राजनेताओं की एक जमात ऐसी थी जो नैतिकता का पालन करती थी। वहीं दूसरी ओर बीते कुछ वर्षों से राजनेताओं के बयानों में आपको अभद्रता के कई उदाहरण मिलेंगे। दल चाहे कोई भी हो नेताओं की जवान फिसलते देर नहीं लगती। फिर वो चाहे किसी पुरुष नेता का महिला के संदर्भ में दिया गया बयान हो, किस धर्म या जाति विशेष के लोगों के खिलाफ दिया गया बयान हो या किस महिला नेता का किसी आम आदमी को धमकाने वाला बयान हो। नेता अपनी कुर्सी की गर्मी और अहंकार के चलते सभी हर्दें पार कर देते हैं। बीते कुछ दिनों में अलग-अलग दलों के नेताओं द्वारा जिस तरह की बयानबाजी देखने को मिली है उससे यह बात तो साफ है कि नेता सुखियों में बने रहने के



तुरंत कपड़े उतारकर फिर पुस्तकें व कपड़े एक हाथ में रखकर पानी में कूद पड़े और तैरकर उस पार पहुँच और समय पर ही अपनी उपस्थिति स्कूल में दर्ज कराई। ऐसा एक बार नहीं अनेक बार हुआ। घर की आर्थिक स्थिति ने भी उन्हें ऐसा करने के लिये मजबूर किया। जब ललितादेवी के साथ उनका व्याह हुआ तो उन्होंने पहले से ही दहेज एवं विवाह के तामझाम के लिये पूर्ण कर दिया। लड़की वालों के यहाँ एकदम सादगीपूर्ण विवाह संपन्न हुआ था। शास्त्री जो सर्वगुण सम्पन्न व्यक्ति थे। देश, समाज और जनता के आम जरूरतों उनकी समस्याओं पर ही चिंतन विशेष तौर पर करते थे। ये नेकी के साक्षात् मूर्ति थे। शास्त्री जी अपने किशोरावस्था से ही स्वतंत्रता संग्राम में कुद पड़े थे। स्वतंत्रता संग्राम के उनके साथी गोविंद वल्लभ पंत, रफी अहमद किदवाई. डॉ. राजेंद्र प्रसाद, जयनारायण व्यास महावीर त्यागी, कामरेड रामकृशन, आचार्य कृपलानी, मोहम्मद अब्दुल कलाम आजाद, सी. राजगोपालाचारी, गणपतर खान शंकर राव देव, बाबू पुरुषोत्तम दास टेंडन, बाबा मंग सिंह और प्रकाश नारायण आदि थे। इनके साथियों पर भी इनकी छाप का गहरा असर हुआ। गाँधीजी के साथ उन्होंने असहयोग आंदोलन के संचालन पर खूब मेहनत की। 1947 में भारत आजाद हुआ. और नेहरूजी भारत के

पहले प्रधानमंत्री बने। 1951 में नेहरूजी जब भारत के प्रधानमंत्री एवं कांग्रेस अध्यक्ष थे, तब उन्होंने शास्त्रीजी को कांग्रेस का महासचिव नियुक्त किया। कुछ समय बाद नेहरु जी ने उन्हें रेल व परिवहन विभाग का मंत्रीपद सौंपा। उनके ईमानदारी का परिचय इस पद पर भी देखने को मिला. जबकि एक रेल दुर्घटना की जिम्मेदारी अपने ऊपर लेते हुये उन्होंने पद से इस्तीफा दे दिया। नेहरु हर जी के लाख कहने पर भी इस्तीफा वापस नहीं लिया। यह था उनका कर्तव्य एवं दायित्व बोध ऐसी नैतिकता और सद्भावता आज कहीं देखने को नहीं मिलती। दूसरे आम चुनाव में लाल बहादुर पुनः भारी मतों से जीतकर संसद में पहुँचे और पुनः परिवहन, यातायात और उद्योग मंत्रालय का कार्यभार सम्हाला। कुछ समय बाद सन् 1960 में गृहमंत्री गोविंद वल्लभ पंत के अस्वस्थ हो जाने पर शास्त्री जी को गृह मंत्रालय का भी कार्यभार सम्हालना पड़ा। ऐसे ही जब एक बार किसी कपड़ा मिल का अवलोकन कर रहे थे तब वहाँ के अधिकारियों व कर्मियों ने शास्त्री जी की पत्नी के लिये उन्हें एक उत्तम किस्म की साड़ी भेंट करनी चाही, तभी उन्होंने उसका दाम पूछा और कहा कि इतने ऊंचे दाम की साड़ी मैं नहीं खरीद सकता, जबकि वे भेंट करना चाहते थे लेकिन उन्होंने उसे वापस कर दिया। क्या ऐसी सादगी, एवं ईमानदारी व भोलापन आज के

बिगड़े.बोल : कब समझदार बनेंगे माननीय

एन्य किसी भी स्तर पर जा सकते हैं। ऐसे में देखना यह है कि राजनैतिक दलों का शीर्ष नेतृत्व ऐसे बेलगाम नेताओं के खिलाफ क्या कार्रवाई करता है। यदि कोई भी दल इस बात की दुहाई दे कि वे महिला सम्मान के प्रति कटिबद्ध है और वहीं उसी के दल के नेता किसी जनसभा में किसी सड़क की तुलना विपक्षी दल की किसी महिला नेता के 'पालों' से करता है तो यह बात न सिर्फ नितंदनीय होनी चाहिए बल्कि ऐसे नेता को उसके शीर्ष नेतृत्व से कड़ी फटकार और सजा भी मिलनी चाहिए जिससे कि अन्य नेताओं को सबक मिले, परंतु क्या ऐसा हुआ या ऐसा होता है? यदि इसका उत्तर 'नहीं' है तो यह बात स्पष्ट है कि ऐसे अनैतिक नेताओं को उनके शीर्ष नेतृत्व की पूरी हमदर्दी एवं आशीर्वाद प्राप्त है। पिछले दिनों में जहां एक दल के नेता ने एक महिला नेता और एक महिला मुख्य मंत्री के लिए अभद्र भाषा का प्रयोग किया वहीं एक अन्य दल के नेता ने एक सभा में अपने क्षेत्र के वोटरों को ही दोषी ठहराया। इतना ही नहीं उनकी तुलना 'वेश्या' से भी कर डाली। उसी राज्य में एक अन्य दल के वरिष्ठ नेता ने भी अपने वोटरों को इस तरह धमकाया कि ये बयान भी सुखियों में छा गया। इस वरिष्ठ नेता ने तो यहां तक कह डाला कि 'सिर्फ इसलिए कि आपने वोट दिया इसका मतलब यह नहीं है कि आप मेरे मालिक हैं।' क्या आपने मुझे अपना नौकर बना लिया है?' यह बात तो जगजाहिर है कि चुनावी दिनों में हर नेता अपने वोटरों के आगे-पीछे घूमते हैं। उन्हें रझाने के लिए क्या-क्या नहीं करते, परंतु जैसे ही वे सत्ता में आते हैं तो अपना असली रंग

दिखाने में पीछे नहीं हटते। ऐसे में कबीर दास जी का यह दोहा याद आता है, 'ऐसी वाणी बोलिए, मन का आपा खोये। औरन को शीतल करे, आपहुं शीतल होए।' जो हमें बचपन से ही सिखाता आया है कि चाहे कुछ भी हो हमें ऐसी भाषा बोलनी चाहिए जो सुनने वाले के मन को आनंदित करे। जहां मिटे वचन सुनने वालों को सुख देते हैं, वहीं हमारे मन को भी आनंदित करते हैं, परंतु क्या हमारे द्वारा चुने गये जनप्रतिनिधि इसका अनुसरण कर रहे हैं? या सत्ता के अहंकार में आपा खो रहे हैं। एक समय था जब नेता अपने क्षेत्र की जनता को सर-आंखों पर बिठा कर रखते थे। उनकी हर छोटी-बड़ी समस्या का हल निकालने के लिए हर कदम उठाते थे। अपने क्षेत्र के वोटर के खुशी और गम में भी परिवार की तरह ही शामिल हुआ करते थे, परंतु आजकल कुछ नेताओं को छोड़ कर ऐसे नेता आपको दूढ़े नहीं मिलेंगे। पुरानी पीढ़ी के नेता जिस सादगी से चुनाव के पहले रहते थे, चुनावों में जीतने के बाद भी वे उसी सादगी से ही नजर आते थे, परंतु आजकल के नेता चुनावों में जितनी भी सादगी दिखाएं, चाहे चुनाव जीतने के बाद सादगी से रहने के जितने भी वादे क्यों न करें, चुनाव जीतते ही अपने किए वादों से मुकरने में क्षण भर भी नहीं लगाते। बिना यह सोचे कि लोकतंत्र में जनता ही मालिक है नेता नहीं। भारत जैसे देश के लिए कहा जाता है कि ह्यचार कोस कोस पर पानी बदले आठ कोस पर वाणी' यानी हमारे देश में विविधताओं का होना प्राचीन युगों से चला आ



रहा है। भारत में अनेक धर्मों, जातियों, विचारों, संस्कृतियों और मान्यताओं से संबंधित विभिन्नताएं हैं, किंतु उनके मेल से एक खूबसूरत देश का जन्म हुआ है, जिसे हम भारत कहते हैं। भारत की ये विविधताएं एकता में बदल गई हैं, जिससे इस देश को विश्व का एक सुंदर और सबल राष्ट्र बना दिया है। शायद इसीलिए भारत के लिए कहा गया है कि 'अनेकता में एकता: मेरे देश की विशेषता'। इसलिए हमें सभी धर्मों, विचारधाराओं और संस्कृतियों का सम्मान करना चाहिए। हमारे द्वारा चुने गए नेता, चाहे किसी भी दल के क्यों न हों, चुनाव जीतते ही यदि अपनी असभ्यता का परिचय देने लग जाएं और उनके दल द्वारा उन्हें किसी भी तरह दंड न दिया जाए। तो अगली बार जब भी ऐसे नेता जनता के सामने याचक बन कर आएंगे तो वोटरों द्वारा ऐसे नेताओं का बहिष्कार कर उन्हें आईना जरूर दिखाया जाए। ऐसा करने से इन असभ्य नेताओं में एक मजबूत संदेश जाएगा। तब शायद उन्हें कबीरदास जी का दोहा याद आएगा।



टंड के मौसम में डैंड्रफ से हैं परेशान तो इन आसान उपाय को अपनाकर पाएं छुटकारा

टंड के मौसम में डैंड्रफ होने की समस्या आम हो जाती है। ये सिर्फ हमारे बालों को नुकसान ही नहीं पहुंचाती बल्कि शर्मिंदा भी करती है। इसे दूर करने के लिए कैमिकल युक्त शैम्पू, कंडीशनर का ज्यादा इस्तेमाल करने के बजाय कुछ अन्य उपाय किए जाएं, तो बालों को होने वाले नुकसान से बचाया जा सकता है आइए जानते हैं कुछ टिप्स.

नारियल का तेल

नारियल का तेल रूसी के लिए एक बेहतरीन उपाय है। नहाने से पहले 4-5 चम्मच नारियल के तेल से मालिश करें और 1-2 घंटे बाद बालों को धो लें। रातभर लगाकर भी छोड़ सकते हैं। इससे डैंड्रफ में राहत मिलती है। ऐसा शैम्पू भी इस्तेमाल कर सकते हैं जिसमें नारियल तेल हो। शैम्पू करने से पहले डैंड्रफ को साफ करने के लिए नमक बहुत कारगर है। नमक को स्कैल्प पर डालकर हल्के हाथों से रगड़ें इससे मृत त्वचा

निकलने लगेगी। कुछ देर रगड़ने के बाद शैम्पू कर लें। आप पाएंगे कि डैंड्रफ पहले से काफी कम हो रहे है। जब भी शैम्पू करें इस प्रक्रिया को अपनाएं कुछ ही समय में डैंड्रफ से काफी हद तक छुटकारा मिल जाएगा।

नींबू का रस

दो चम्मच नींबू के रस को अपने बालों के स्कैल्प पर रगड़कर इससे अच्छी तरह से मालिश करें। फिर एक कप पानी में एक नींबू का रस मिलाएं अब इस पानी से अपने बालों को साफ करें। ऐसा आप हफ्ते में 3 बार करें।

नारियल और नींबू का रस

नारियल के तेल में एक चम्मच नींबू का रस डालकर इन्हें हल्का गर्म कर लें। अब इस तेल से अपने बालों की मसाज करें। फिर शैम्पू से अपने बालों को धो लें। ये प्रक्रिया आप हफ्ते में कम से कम 2 बार जरूर करें।



शादी के बाद एक लड़की को अपने पति से ही नहीं बल्कि अपनी सास-ससुर से भी अच्छा तालमेल बनाने की जरूरत है। लेकिन तब क्या हो जब आप घर और ऑफिस की जिम्मेदारियों के चलते बिल्कुल भी समय नहीं निकाल पा रही हों।

वो जमाना गया जब महिलाएं घर की चार दीवारी में रहकर ही अपना पूरा जीवन काट देती थीं। आज की महिलाएं न केवल अपने अधिकारों को लेकर स्वतंत्र हैं बल्कि पुरुषों की तरह घर से बाहर निकल अपनी एक अलग पहचान बनाने में भी कामयाब हो रही हैं। हां, वो बात अलग है कि लाख-पढ़ी लिखी होने के बाद भी लड़कियों को ससुराल जैसी पारंपरिक भूमिकाओं से गुजरना पड़ता है, जिसके लिए उन्हें न केवल अपने पति के दिल में जगह बनानी होती है बल्कि अपने सास-ससुर संग एक अच्छे रिश्ते की शुरुआत करना भी उनकी जिम्मेदारी में से एक है। लेकिन सबसे ज्यादा दिक्कत कामकाजी महिलाओं के साथ है, जिन्हें हर पल इस बात की चिंता सताती रहती है कि घर और ऑफिस के बीच क्या वह अपनी संतुलन भूमिकाएं निभा भी पाएंगी या नहीं?

खैर, हम इस तर्क-वितर्क से किसी नतीजे पर पहुंचें उससे पहले आपको बता दें कि जहां कुछ महिलाओं ने एक संयुक्त परिवार में रहने के कई दोष बताए हैं तो वहीं इसके विपरीत कई कामकाजी महिलाओं का ऐसा कहना है कि एक संयुक्त परिवार में रहना

कामकाजी महिलाओं को हमेशा रखना चाहिए इन बातों का ध्यान

आपके लिए एक मजबूत समर्थन बन सकता है बशर्ते आपको काम और घर के बीच बैलेंस बनाना आता हो। ऐसे में अगर आप भी चाहती हैं कि कम समय में ही आप सभी की लाइली बन जाएं तो आपको इन बातों का हमेशा ध्यान रखें।

काम के साथ घर को भी प्राथमिकता

हम इस बात को अच्छे से समझते हैं कि एक लड़की के लिए उसका करियर कितना महत्व रखता है लेकिन शादी के बाद आपको यह भी समझना चाहिए कि अब आप अकेले नहीं है आपका अपना एक परिवार है, जिसके हिसाब से भी अब आपको चीजों को मैनेज करना होगा। शादी से पहले जहां घंटों-घंटों आप ऑफिस में काम करती थीं तो वहीं अब आपको अपने



परिवार के लिए भी समय निकालना होगा साथ ही साथ घर खर्च के हिसाब से लेकर पार्टनर के माता-पिता की देखरेख करने तक आपको कई बातों को भी ध्यान रखना होगा।

सुनें और समझें

अगर आप वाकई में चाहती हैं कि आप काम के साथ-साथ अपने परिवार की भी लाइली बनी रहें तो सबसे पहले बातों को सुनने और समझने की आवृत्ति डालें। ऐसा करने से न केवल आप अपने सास-ससुर के मन की बातों को जान पाएंगी बल्कि वह भी आपके काम के महत्व को समझेंगे। यही नहीं, अपने परिवार के हर सदस्यों को जानने की कोशिश करें। यही नहीं, साथ ही साथ उन्हें यह भी बताएं कि घर की जिम्मेदारी को निभाने में आपके लिया क्या संभव है और क्या नहीं।

पति से हो खुलकर बातचीत

किसी ने ठीक ही कहा है कि सबसे अच्छी शादी वह होती है जिसमें पति-पत्नी एक-दूसरे के सबसे अच्छे दोस्त हों। अपने सबसे अच्छे दोस्त के साथ प्यार करने से बेहतर कुछ भी नहीं है। ऐसे में कोशिश करें कि आप और आपके पति के बीच एक स्वस्थ दोस्ती का रिश्ता हो। इसके बाद आपको अपनी शादीशुदा जिंदगी में खुद फर्क समझ आ जाएगा। वह न केवल आपको समझेगे बल्कि आपको घर-परिवार की जिम्मेदारी का एहसास होगा।



पहली मुलाकात में जानें एक-दूसरे को

जब भी कपल्स एक-दूसरे से मिलने के बारे में सोचते हैं, तो सबसे पहले जेहन में ये बात जरूर आती है कि आखिर पहली मुलाकात में हम बात क्या करेंगे? यही सवाल हमें परेशान करता रहता है और वैसे भी पहली-पहली मुलाकात तो बहुत खास होती है, जो हमेशा याद रहती है।

लेकिन इस मुलाकात में हम एक-दूसरे से बात ही न कर पाएं या यूं कहें कि उस समय क्या बात करें? ये समझ ही न आए तो क्या करें? क्योंकि हमने आमतौर पर देखा है कि हमारे मन में बातें तो ढेरों रहती हैं, लेकिन पहली मुलाकात पर वे बातें जुबान पर आ ही नहीं पाती और हम शांत बैठ रह जाते हैं। और यहां-वहां देखकर बस यही सोचते रह जाते हैं कि बातें करें तो क्या? आखिर क्या बातें फर्स्ट मीटिंग में करें? कैसे बातों से एक-दूसरे को समझने में आसानी हो सकती है? ऐसी कौन सी बातें हैं, जो आपके पार्टनर को बोर नहीं होने देंगी? आइए जानते हैं। जब भी किसी के साथ पहली मुलाकात के लिए जाएं तो बातों की

शुरुआत आप उनके प्रोफेशन से कर सकते हैं, क्योंकि अधिकतर लोगों को इसमें इंटेस्ट जरूर आता है। चाहे प्रोफेशन के बारे में गॉसिप अच्छी हो या बुरी, इस बारे में बात करना लोग काफी पसंद करते हैं। पार्टनर के फेवरेट एक्टर या एक्ट्रेस के बारे में आप पूछ सकते हैं या अभी रिलीज्ड उन्होंने कौन सी मूवी देखी है? इस बारे में भी आप बात कर सकते हैं। तारीफ किसको पसंद नहीं आती? जनाब तो कॉम्लीमेंट करना बिलकुल भी न भूलें। उन्हें नोटिस करें और उनकी तारीफ कीजिए। आप उनके ड्रेसिंग सेंस की तारीफ कर सकते हैं। दोस्तों के बारे में बात करें, क्योंकि लड़का हो या लड़की-सभी को अपने दोस्तों के बारे में बात करना पसंद आता है। तो आप पूछ सकते हैं कि आपके फ्रेंड्स कैसे हैं? किस फ्रेंड्स से अपनी बातें शेयर करते हैं? इस तरह की बातें आपकी मुलाकात को और इंटेस्टिंग बनाएंगी। वीडियो के बारे में पूछें कि उनके इस वीडियो का प्लान है? यदि कोई प्लान नहीं है, तो आप प्लान कर सकते हैं जिससे कि एक-दूसरे को अच्छे से समझने के लिए और समय मिल सके। अगर बातें बोरिंग हो रही हैं तो आप हंसी-मजाक कर सकते हैं कि उनके साथ ऐसा वाक्या कब हुआ, जब उनकी हंसी रुक ही नहीं रही थी। ऐसी कोई फनी बात, जो आपके साथ हुई हो तो वह बात भी आप उनसे शेयर कर सकते हैं।

कुर्ते से लगे स्मार्ट

कुर्ते आज भी उतने ही लोकप्रिय हैं, जितने पहले थे। बस, इसकी स्टाइल में थोड़ा बदलाव जरूर देखने को मिल रहा है। आजकल पाकिस्तानी सूट ज्यादा पसंद किए जा रहे हैं। लड़कियां जोधपुरी शैली के सलवार कुर्ते भी बनवाना पसंद करती हैं। ये कुर्ते ढीले-ढाले और कई रंगों में उपलब्ध होते हैं। आम तौर पर लोगों की राय है कि आज के आधुनिक युग में लड़कियां जींस आदि पहनना ही पसंद करती हैं और सलवार कुर्ते तथा अन्य पारंपरिक कपड़ों का चलन कम हो रहा है, लेकिन फैशन डिजाइनरों की राय इससे अलग है। उनका कहना है कि आज भी लड़कियां सलवार कमीज बनवाना पसंद करती हैं और अब तो इसमें रेड्रो फैशन की झलक भी देखने को मिल रही है। आजकल तो लड़कियां जींस के साथ भी लांग और शार्ट कुर्ते पसंद करती हैं। सलवार के साथ शार्ट कुर्ते या अनारकली स्टाइल के कुर्ते ज्यादा देखे जा रहे हैं। संगीता का कहना है कि कुर्ते को जींस, लेगिंग्स और जैगिंग्स, मतलब डेनिम स्टाइल की जींस की तरह दिखने वाली सलवार के साथ पहनने का फैशन काफी प्रचलन में है। केवल सलवार कमीज ही नहीं, दुल्हन के लहंगों में भी आधुनिकता और पारंपरिकता का मिश्रण देखने को मिल रहा है।



सलवार कमीज का जादू कुछ और ही होता है। इस आउटफिट में थोड़ी सी तब्दीली करते ही इसे इंडो वेस्टर्न लुक दिया जा सकता है। आइए जानते हैं सलवार-कुर्ते से जुड़े कुछ टिप्स- अगर आप अपनी हाइट थोड़ी ज्यादा दिखाना चाहती हैं, तो थोड़ा लंबा कुर्ता सिलवाएं। मसलन अगर आपकी हाइट 5'3'' है तो आपको 47-48 इंच का कुर्ता सिलवाना चाहिए। अगर आपके हाथ मोटे हैं और आप स्लीवलेस नहीं पहन सकती हैं, तो 5 इंच की स्लीव्स बनवा लें। इससे आपके हाथ का अतिरिक्त मांस भी छिप जाएगा और आपके हाथ दुबले दिखेंगे। सलवार को बहुत सारे स्टाइल्स में पहना जा सकता है। इनका स्टाइल भी ट्रेंड के साथ बदलता रहता है। फिलहाल ढीली सलवार फैशन में है और शॉर्ट कुर्ते ने एक बार फिर एंट्री की है।



क्या आप जानते हैं लेगिंग्स पहनने का सही तरीका

जब भी कम्फर्ट की बात आती है तो सबसे पहले हम लेगिंग्स के बारे में सोचते हैं, क्योंकि लेगिंग्स काफी आरामदायक होती है। लेकिन इसे पहनने में हम कुछ ऐसी गलतियां कर देते हैं जिसके कारण हम हंसी के पात्र बन जाते हैं।

क्या आप जानती हैं लेगिंग्स पहनने का सही तरीका? अगर हां तो यह बहुत बढ़िया बात है और यदि आपका जवाब ना है तो इस लेख को पढ़कर आप इस बारे में पूरी जानकारी पा सकते हैं। हमने अक्सर ऐसी कुछ महिलाओं को देखा है, जो लेगिंग्स के साथ क्रॉप टॉप ट्राई कर लेती हैं। लेकिन

यदि आप भी ऐसी गलती करती हैं तो इसे छोड़ दें, क्योंकि लेगिंग्स के साथ कभी भी क्रॉप टॉप नहीं पहना जाता। यह दिखने में बहुत भद्दा लगता है। ये तो बात हुई क्रॉप टॉप कि लेकिन अगर आप छोटे टॉप पर लेगिंग्स पहनने का विचार कर रही हैं तो इसे बिलकुल भी ट्राई न करें, भले ही आप किन्ती भी स्लीम ट्रीम क्यों न हों, पर छोटे टॉप के साथ लेगिंग्स की यह स्टाइल आप पर बिलकुल अच्छा नहीं लगेगी। आपको ऐसी अंडरवियर पहनना चाहिए जिसमें हेमलाइन लेगिंग्स के ऊपर नजर न आए। ऐसे लेगिंग्स पहनने में बहुत अजीब सा लगता और आप इसमें कम्फर्टबल भी नहीं रह सकती हैं। प्रिंटेड लेगिंग्स को न करें ट्राई आप प्रिंटेड लेगिंग्स ट्राई न ही करें तो बेहतर है, क्योंकि ये पहनने में बिलकुल भी अच्छे नहीं लगते। इसलिए अगर आप लेगिंग्स लेने जा रही हैं, तो प्रिंटेड लेगिंग्स न ही लें तो बेहतर है।

पाएं हाई हील्स की तकलीफ से छुटकारा

अधिकतर लड़कियां हिल्स पहनना तो चाहती है, लेकिन उन्हें लगता है कि इसे पहनना काफी तकलीफमय हो सकता है, लेकिन एक अच्छी और स्टाइलिश ड्रेस के साथ हिल्स काफी अच्छी लगती है पर पैरों की तकलीफ के कारण इसे नहीं चुनते हैं। लेकिन हम यहां आपको कुछ ऐसे टिप्स बता रहे हैं जिन्हें अपनाकर आप हाई हिल्स में कम्फर्टबल हो सकती हैं हम ये नहीं कहते कि हिल्स में आप बहुत आरामदायक महसूस करेंगी लेकिन कुछ टिप्स को अपनाकर आप हाई हिल्स पहनने से होने वाली दिक्कतों से बच सकती हैं तो आइए, जानते हैं कि हाई हील्स पहनने के दौरान होने वाली परेशानी को आप कैसे कम कर सकती हैं

सैंडिल के सही साइज का चुनाव करें हील्स वाली सैंडिल में आपके पैर आगे की ओर पुरा होते हैं, ऐसे में अपने लिए सही साइज की सैंडिल का चुनाव करें।

अपना फुट टाइप पहचानें

सभी के फुट अलग-अलग होते हैं, किसी के पैर के पंजे चौड़े तो किसी के पतले होते हैं। अपने पंजे के अनुसार सैंडिल के आगे की डिजाइन चुनें, जिससे कि आपके पैर आगे से दबे नहीं।

मोटी हील को प्राथमिकता दें

मोटी हील आपके पैरों को ज्यादा कवरेज और सपोर्ट देती हैं। इसे पहनने से आपकी एडिंयों पर कम दबाव पड़ेगा, जिससे पैरों में दर्द भी कम होगा।

ब्रेक लें

पाटी व किसी खास अवसर पर ही हाई हील्स पहनें। यदि इसके अलावा भी पहनें तो कभी-कभी फ्लेट चप्पल पहनें और अपने पैरों को थोड़ा ब्रेक दें।

हील की पोजीशन का ख्याल रखें

आपके जूते ऐसे होने चाहिए जिसमें बाँड़ी का भार पंजों और हील दोनों पर रहे। वरना पंजो या फिर हील पर ज्यादा प्रेशर पड़ेगा। ऐसा होने पर पैरों में दर्द शुरू हो सकता है। इसलिए हील की पोजीशन का ख्याल जरूर रखें।



मप्र में अब तक के सबसे बड़े सायबर फ्राँड नेटवर्क का खुलासा, दो हजार करोड़ तक की ठगी की आशंका

भोपाल 13 जनवरी (एजेंसी)। मध्य प्रदेश में अब तक के सबसे बड़े साइबर ठगी के नेटवर्क का राजफाश हुआ है। साइबर पुलिस व मध्य प्रदेश आतंकवाद निरोधी दस्ता (एटीएस) के अधिकारियों ने इस नेटवर्क द्वारा दो हजार करोड़ रुपये तक की साइबर ठगी का अनुमान लगाया है।

इस नेटवर्क से जुड़े 23 आरोपितों को साइबर पुलिस सतना, जबलपुर, हैदराबाद और गुरुग्राम से पकड़ चुकी है। इनसे की गई पूछताछ और अब तक की जांच में सामने आया है कि आरोपित ठगी की राशि को म्यूल अकाउंट में डालते थे।

हवाला, क्रिप्टो करेंसी का उपयोग - पूछताछ में यह भी पता चला है कि आरोपित हवाला, क्रिप्टो करेंसी आदि का उपयोग भी पैसा इधर से उधर करने के लिए करते थे। म्यूल अकाउंट से दुबई सहित दूसरे देशों में धनरशि भेजने की जानकारी भी मिली है। इस कारण इसे टैरर फंडिंग से जोड़कर देखा जा रहा है। बता दें कि खुफिया सूचना के आधार पर जबलपुर साइबर पुलिस ने सात जनवरी



को मध्य प्रदेश के सतना और जबलपुर जिलों से 12 आरोपितों को गिरफ्तार किया था। उसके अगले दिन छह अन्य को गिरफ्तार किया गया। हिरासत में छह संदिग्ध - उधर, सात जनवरी को ही मध्य प्रदेश एटीएस ने गुरुग्राम के प्लेट में दबिश देकर छह

भारत की बड़ी कामयाबी ! सिर्फ 90 दिनों में साइबर जालसाजों से 1,800 करोड़ की बचत

नई दिल्ली । पिछले तीन महीनों में केंद्र सरकार द्वारा शुरू की गई ऑनलाइन 'संदिग्ध रजिस्ट्री' ने साइबर अपराधों के खिलाफ बड़ी सफलता हासिल की है। इस रजिस्ट्री की मदद से 6 लाख फर्जी लेन-देन को रोक़ा गया है, जिससे देश को 1,800 करोड़ की बड़ी बचत हुई है।

गृह मंत्रालय के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि यह

रजिस्ट्री साइबर अपराधियों से जुड़े वित्तीय धोखाधड़ी और अन्य साइबर अपराधों के मामलों में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। 'संदिग्ध रजिस्ट्री' को 10 सितंबर 2023 को केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने लॉन्च किया था। यह रजिस्ट्री राष्ट्रीय साइबर अपराध रिपोर्टिंग पोर्टल (NCRP) पर आधारित है और इसमें अब तक 14 लाख से अधिक साइबर

हैं। मासूक को गुरुग्राम और साजिद को सतना से गिरफ्तार किया गया था। एटीएस और साइबर पुलिस पूरे नेटवर्क की तह तक जाने में जुटी हुई है, हालांकि गुरुग्राम में हिरासत में एक संदिग्ध मौत के चलते फिलहाल पूछताछ कमजोर पड़ गई।

ऐसे करते थे साइबर ठगी - पुलिस अधिकारियों के अनुसार, अब तक साइबर ठगी के जो आरोपित पकड़े गए हैं, उनसे पूछताछ में सामने आया है कि वे सरकारी योजनाओं को लूट दिलाने के लिए लोगों के बैंक खाते खुलवाते थे। आमतौर पर गरीबी रेखा से नीचे (बीपीएल) के लोगों को चुनते थे।

अपराधियों का डेटा संग्रहीत है। इसका उद्देश्य न केवल वित्तीय धोखाधड़ी को रोकना है, बल्कि देश की वित्तीय प्रणाली को सुरक्षित और सुदृढ़ बनाना भी है। राष्ट्रीय साइबर अपराध रिपोर्टिंग पोर्टल (NCRP) के आधार पर बनाई गई यह रजिस्ट्री 14 लाख साइबर अपराधियों का डेटा रखती है, जिनका संबंध वित्तीय धोखाधड़ी और अन्य साइबर अपराधों से है।

जुलाई तक होगा रतलाम-नीमच रेल लाइन का दोहरीकरण



नीमच 14 जनवरी (निप्र)। रतलाम रेल मंडल के नवनियुक्त मंडल रेल प्रबंधक (डीआरएम) अवनीश कुमार मंगलवार को नीमच पहुंचे। यहां उन्होंने रेलवे स्टेशन का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने बताया कि नीमच से रतलाम रेल खंड का दोहरीकरण कार्य जून-जुलाई 2025 तक पूरा हो जाएगा। यात्रियों के लिए पार्किंग होगी व्यवस्था - रेल प्रबंधक अवनीश कुमार मंगलवार की सुबह विशेष ट्रेन से सुबह नीमच पहुंचे।



नीमच 14 जनवरी (निप्र)। रामपुरा तहसील के ग्राम खिमला में ग्रीन-को कंपनी के माध्यम से पावर प्लांट का काम चल रहा है। बीते दो दिनों में दो मजदूरों की मौत और एक अन्य मजदूर के गंभीर रूप से घायल होने पर मजदूर सिहर उठे। रोज 12 घंटे काम के बावजूद समय पर मजदूरी नहीं मिलने और प्लांट में काम करते हुए मृत्यु होने पर मजदूरों के परिवारों को मुआवजा को लेकर मजदूरों का आक्रोश मंगलवार को छलक गया।

धमकाया जाता है। मजदूरों के साथ अनहोनी होने पर मामले को दबाया जाता है, जबकि मजदूरों को प्लांट में काम करते मृत्यु होने अथवा शारीरिक नुकसान होने पर सुरक्षा का भरोसा दिया जाना चाहिए।

पिता जगदीश परिहार की गिट्टी प्लांट के मिक्सर मशीन में फंसने के कारण मौत हो चुकी है।

सवाल उठ रहे हैं। लगातार हो रहे हादसे कंपनी प्रबंधन की लापरवाही को दर्शाते हैं, जिससे मजदूरों में अपनी सुरक्षा को लेकर भय का माहौल है।

रोटरी डायमण्ड का कॉलर पीन आदान-प्रदान कार्यक्रम सम्पन्न, सत्र 2025-26 के चुनाव सम्पन्न



नीमच 14 जनवरी (निप्र) । शहर की सामाजिक गतिविधियों में सबसे आगे रहने वाली संस्था रोटरी डायमण्ड, नीमच की एक साधारण सभा कनावटी स्थित होटल कस्तुरी बाग पर आयोजित की गई। जिसके अंतर्गत निवृत्तमान अध्यक्ष रोट. गौरव पाराशर द्वारा वर्तमान अध्यक्ष रोट. कमल मंगल, सचिव रोट. सौरभ शर्मा द्वारा सचिव रोट. संजय सोनी एवं कोषाध्यक्ष रोट. रूचिर माहेश्वरी द्वारा रोट. आशीष गर्ग (गान) को सादगी पूर्ण माहौल में सत्र 2024-25 की कॉलर पीन का

आदान-प्रदान किया गया। साधारण सभा को संबोधित करते हुए वर्तमान अध्यक्ष रोट. कमल मंगल ने बताया कि रोटरी डायमण्ड विगत 11 वर्षों से सामंजस्य सेवा, पीडित मानवता की सेवा के कई प्रकल्प कर चुका है। वर्तमान सत्र में शिक्षा, पर्यावरण, चिकित्सा के क्षेत्र में क्लब द्वारा अनेकों प्रकल्प किये जा चुके हैं बाकि बचे कार्यकाल में और भी मानवतावादी प्रकल्प करेंगे।

उपरोक्त कार्यक्रम में बड़ी संख्या में क्लब के दम्पति सदस्यों ने अपनी सहभागिता की। साथ ही

इस पारिवारिक माहौल में मकर संक्रांति के उपलक्ष्य में दम्पति सदस्यों एवं बच्चों ने क्रिकेट, पतंग, गिल्ली डंडा आदि मनोरंजक गेम्स का आनंद लिया। तत्पश्चात् सांथकाल को साधारण सभा की बैठक में नवीन सत्र 2025-26 के लिये सर्वसम्मति से रोट. सौरभ शर्मा (निर्णय सागर पंचांग) को निर्विरोध अध्यक्ष चुना गया। रोट. सौरभ शर्मा द्वारा नवीन सत्र के लिये रोट. आशीष सेनी को सचिव एवं रोट. भुवनेश शर्मा को कोषाध्यक्ष नियुक्त किया गया। नवीन सत्र के तीनों पदाधिकारियों को सभी दम्पति सदस्यों ने अग्रिम शुभकामनाएँ प्रेषित की। नवनिर्वाचित अध्यक्ष सौरभ शर्मा ने क्लब के सभी सदस्यों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि टीम भावना के साथ पीडित मानवता की सेवा में क्लब और उंचाईयों को प्रदान करेगा, ऐसा आप सभी को विश्वास दिलाता हूँ।

मकर संक्रांति पर गौशाला में आयोजन हुए, अठाना में आज श्री गणपति जी की स्थापना होगी



अठाना 14 जनवरी (निप्र) । स्थानीय नगर एवं आसपास के ग्रामों में गौशालाओं में मकर संक्रांति पर के पवित्र दिवस पर विभिन्न धार्मिक आयोजन संपन्न हुए । सुबह ब्रह्म मुहूर्त में मंदिरों देवालयों में पूजा अर्चना महा आरती के पश्चात सुबह 8: बजे से धर्मालु नागरिकों द्वारा गौशाला के अभाव में इधर-उधर भटकने वाली निराश्रित गौमाता को चार गुड आदि ग्रहण कराए गए ।

कनेरा क्षेत्र में अनोपपुरा के समीप स्थित श्री गोपाल कृष्ण गौशाला कल्पवृक्ष धाम पर गौशाला में महंत योगी लालनाथ जी आसान दरिया नाथ सुखानंद मंदिर समिति के प्रबंधक रिटायर्ड रेवेन्यू इंस्पेक्टर बंसीलाल नागदा नगर प्रेस क्लब अध्यक्ष शांतिलाल चौहान गौशाला के पुष्कर जी शर्मा सतीश राठी सहित अन्य धर्मालु नागरिकों द्वारा दिनभर गौशाला में स्थित गौ माता को लापसी गुड़

हरी घास चारा आदि ग्रहण कराया गया । इसी प्रकार समीपस्थ स्थित गांव केली में स्थित श्री लक्ष्मी नाथ गुरु कमल गौशाला में भी गौमाता को गुड लापसी हरी घास खिलाए गए। अठाना नगर के मध्य प्रवाहित होने वाली गंभीरी नदी के पुराने ब्रिज पुलिया के तट पर श्री गणेश चौक पर गणपति स्थापना गणपति उत्सव समिति द्वारा आज 15 जनवरी बुधवार को की जाएगी ।

प्रदेश में पुलिसकर्मियों के बच्चों को मिलेगा नकद पुरस्कार, खेलों में राष्ट्रीय और राज्य स्तरीय पदक विजेता हों



भोपाल 14 जनवरी (एजेंसी)। पुलिसकर्मियों के बच्चों को खेलों में प्रोत्साहित करने के लिए पुलिस मुख्यालय बड़ा कदम उठाने जा रहा है। अब खेलों में राष्ट्रीय व राज्य स्तरीय पदक लाने वाले बच्चों को तीन हजार से लेकर 10 हजार रुपये तक नकद पुरस्कार दिया जाएगा। पुलिस मुख्यालय ने सोमवार को इस संबंध में आदेश जारी कर दिए हैं। ओपन या स्कूल स्तरीय खेलों में राष्ट्रीय स्तर पर स्वर्ण, रजत और कांस्य पदक लाने पर क्रमशः 10 हजार, आठ हजार और छह हजार रुपये का पुरस्कार दिया जाएगा। इसी तरह से राज्य स्तरीय खेलों में स्वर्ण, रजत और कांस्य पदक लाने पर क्रमशः पांच हजार, चार हजार और तीन हजार रुपये का पुरस्कार मिलेगा।

इसके पहले बोर्ड परीक्षाओं में निर्धारित से अधिक अंक लाने वाले पुलिसकर्मियों के बच्चों को प्रोत्साहित करने का काम पुलिस मुख्यालय प्रारंभ कर चुका है। इसका लाभ आरक्षक से लेकर आईपीएस अधिकारियों तक के बच्चों को मिलेगा। एडीजी कल्याण (अनिल कुमार) ने इस संबंध में सभी जोनल आईजी, डीआईजी, पुलिस अधीक्षक और पुलिस इकाइयों के प्रमुखों को दिशानिर्देश जारी कर दिए हैं। अधिकारियों को निर्धारित प्रारूप में अपने जिले या इकाइयों के इस तरह के बच्चों की जानकारी पुलिस मुख्यालय को देनी होगी। अनिल कुमार ने कहा कि पुरस्कार योजना से बच्चे प्रोत्साहित होंगे। उन्हें प्रतिस्पर्धाओं में पहुंचने का नया प्लेटफॉर्म मिलेगा।

मंदिरों को सजाया तो मैदानों और गली-मोहल्लों में गिल्ली-डंडा खेला गया, उड़ाई पतंगें

नीमच 14 जनवरी (निप्र) । मकर संक्रांति पर्व मंगलवार को शहर सहित अंचल में परंपराानुसार उत्साह के साथ मनाया। सुबह से ही गली-मोहल्लों सहित मैदानों में गिल्ली-डंडा खेलने वाले तो मैदानों व छतों पर पतंग उड़ाते बच्चों से लेकर बड़े और महिलाएं नजर आईं। मंदिरों में पूजा-अर्चना और दान-पुण्य किया तो चारों तरफ, मैदानों व गोशालाओं में पहुंचकर लोगों ने गोवंश को चारा, गुड़-लापसी खिलाने की कई जगह चारा राशि की गई। सुनाई और पूजा-अर्चना करवाई। बचाना स्थित अग्रवाल समाज के श्री गोपाल मंदिर में भी विशेष आयोजन हुए। शहर के अन्य मंदिरों को भी रंग-बिरंगी पतंगों से सजाया और शाम को भजनों का आयोजन भी हुआ ।

रखकर उत्सव मनाया। दूसरी तरफ मंदिरों को पतंग व डोर-चरखी से सजाया जाकर श्रृंगार किया और भगवानपूजा-अर्चना व आरती की गई। तिल्ली-गुड़ लड्डू, चक्की आदि चढ़ाने के साथ प्रसाद के रूप में वितरण किया गया। शहर में जाऊ बिल्डिंग क्षेत्र स्थित प्राचीन श्रीराम मंदिर को सजाया गया। श्रृंगार किया। महाआरती कर प्रसादी का वितरण हुआ। घंटाघर स्थित प्राचीन श्री नृसिंह मंदिर में भगवान का विशेष श्रृंगार कर पूजा-अर्चना की गई। सुनाई और पूजा-अर्चना करवाई। बचाना स्थित अग्रवाल समाज के श्री गोपाल मंदिर में भी विशेष आयोजन हुए। शहर के अन्य मंदिरों को भी रंग-बिरंगी पतंगों से सजाया और शाम को भजनों का आयोजन भी हुआ ।

12वीं में हिंदी नहीं होने के चलते नर्सिंग विद्यार्थियों का प्रवेश निरस्त

भोपाल 14 जनवरी (एजेंसी)। नर्सिंग कॉलेजों के लिए चल रही प्रवेश प्रक्रिया एक बार फिर विवादों में आ गई है। कालेजों में प्रवेश देने के बाद कई विद्यार्थियों का प्रवेश इसलिए निरस्त कर दिया गया है कि सीबीएसई में 12वीं में उनका विषय हिंदी नहीं था। परेशान अभ्यर्थी विभिन्न जिलों में प्रदर्शन कर रहे हैं। कुछ अभ्यर्थियों ने मंगलवार को भोपाल में चिकित्सा शिक्षा संचालनालय (सतपुड़ा भवन) के सामने प्रदर्शन किया। उन्होंने पूर्व मुख्यमंत्री व राज्यसभा सदस्य दिग्विजय सिंह से भी उनके आवास पर भेंट की। अभ्यर्थियों ने आरोप लगाया कि परिणाम घोषित होने और प्रवेश देने के बाद हजारों योग्य छात्र-छात्राओं के प्रवेश रद्द किए जा रहे हैं।

आज ही बुक करें अपना **Zelo** इलेक्ट्रिक स्कूटर, घर ले जाए

मात्र रु ~~45980/-~~ रु **42000/-**

में वो भी 1 साल की बैटरी वारंटी के साथ

मात्र रु **42000/-** से इलेक्ट्रिक स्कूटर की रेंज से शुरू ...

RTO मॉडल मात्र

रु ~~81000/-~~ रु **76000/-***

(माइलेज 80-100 कि.मी.) 3 साल बैटरी की वारंटी के साथ, आज ही बुक करवाए और पाए एक सोने का सिक्का ।

Zelo Electric Scooter

बंगला नं. 23, IDBI बैंक के सामने,
Lic रोड, नीमच (म.प्र.)
मो. 940742399, 8770664866